लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 3, संख्या: 4; जनवरी-जून, 2022

सपने

✍ डॉ. रानी श्रीवास्तव

बाहर झमाझम बरसती हुई बारिश के बचने के
लिए
उस लड़की ने जब
खूंटी पर से उतारी थी छतरी
तो उतार लिये थे
कुछ सपने भी

वह जा रही थी
तेजी से
बारिश से उसका बचाव
नहीं हो पा रहा था
जबकि
वह बच नहीं पा रही थी
कई-कई जोड़ी
बुरी नजरों से भी

मुश्किल लग रहा था
उसका बचना
सदियों से
यही होता आया है
बच नहीं पाती हैं लड़कियाँ

बच जाती वह लड़की
यदि उसने
छतरी के साथ
ओढ़ न लिये होते
कुछ सपने।